भाकृअनुप-राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकता में 'राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

27 सितम्बर 2024, कोलकता:

भाकृअनुप-राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकता द्वारा दिनांक 26 सितम्बर 2024 को **"औद्योगीकरण 4.0 के युग में प्राकृतिक संसाधनों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान: चक्रीय अर्थव्यवस्था और सतत पर्यावरण का समन्वय"** विषय पर 'राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन **डॉ. अनिल कुमार शर्मा**, निदेशक, भारतीय जूट उद्योग अनुसंधान संघ, कोलकाता, ने मुख्य अतिथि के रूप में किया । डॉ. शर्मा ने वर्तमान परिपेक्ष्य में मानव जीवन को बेहतर के लिए प्राकृतिक रेशा एवं अन्य संसाधनों का उपयोग के बारे में प्रबल बल दिया। डॉ. शर्मा ने चक्रीय अर्थव्यवस्था और सतत पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए, संस्थान के वैज्ञानिको के द्वारा किये जा रहे शोध कार्य की प्रशंसा कि एवं संगोष्ठी में सम्मलित सभी शोधकर्ताओं, वैज्ञानिको, अकादमिकों एवं छात्रों को 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' और 'सतत पर्यावरण' के छेत्र में वैश्विक स्तर की शोध करने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. डी. बी. शाक्यवार, निदेशक, निनफेट कोलकाता ने संगोष्ठी के माध्यम से संस्थान में वैज्ञानिक एवं प्रसाशनिक गतिविधियों में हिंदी के बढ़ते उपयोग के बारे में बताया। इसके साथ ही डॉ. शाक्यवार ने "प्राकृतिक रेशे वाली फसलों में चक्रीय अर्थव्यवस्था" विषय पर मुख्य व्याख्यान भी प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी में **डॉ. मुकेश कुमार सिंह**, पूर्व निदेशक,उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान, (यूपीटीटीआई), कानपूर ने "औद्योगीकरण 4.0 के युग में तकनीकी कपड़ा की सहायता से चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना" एवं **डॉ. देबबंदया महापात्र**, प्रमुख वैज्ञानिक और प्रमुख, स्वचालन और संयंत्र इंजीनियरिंग प्रभाग, राष्ट्रीय कृषि उच्चतर प्रसंस्करण संस्थान, रांची-झारखण्ड ने "औद्योगीकरण 4.0 के युग में प्राकृतिक संसाधनों का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान: चक्रीय अर्थव्यवस्था और सतत पर्यावरण का समन्वय" विषय पर अपने मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किये ।

डॉ. डी. नाग, पूर्व निदेशक, निनफेट कोलकाता एवं **डॉ. एन सी पान**, पूर्व कार्यकारी निदेशक, निनफेट कोलकाता, ने संगोष्ठी में सम्मलित होने पर ख़ुशी प्रकट की एवं भविष्य में हिंदी में वैज्ञानिक संगोष्ठी को निरन्तर आयोजित करने के साथ साथ तकनिकी सत्र के दौरान निर्णायक की भूमिका भी निभाई।

डॉ. वी. बी. शम्भू, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, अनु. एवं वि. इकाई, एवं आयोजन सचिव, एवं आयोजन सचिव, राष्ट्रीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी ने संगोष्ठी में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन रूप से जुड़े मेहमानो का स्वागत किया एवं संगोष्ठी के माध्यम से हिंदी एवं विज्ञानं के बारे में ज्ञान साझा किया।

संगोष्ठी में भारत के 11 राज्यों के 15 संस्थानों से वैज्ञानिको, शिक्षकों, एवं शोध विद्यार्थियों द्वारा 24 शोध पत्र के सारांश को प्रस्तुतीकरण के लिए भेजा गया था जिसमे से की 21 प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति को दिया। संगोष्ठी में शामिल किये गए सरांशो को एक पुस्तिका के रूप में संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन भी किया गया।

(सूत्र: आईसीएआर-राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, कोलकाता)

कार्यक्रम की झलकियाँ:

संगोष्ठी का उद्घाटन **डॉ. अनिल कुमार शर्मा**, निदेशक, भारतीय जूट उद्योग अनुसंधान संघ, कोलकाता, ने मुख्य अतिथि के रूप में किया

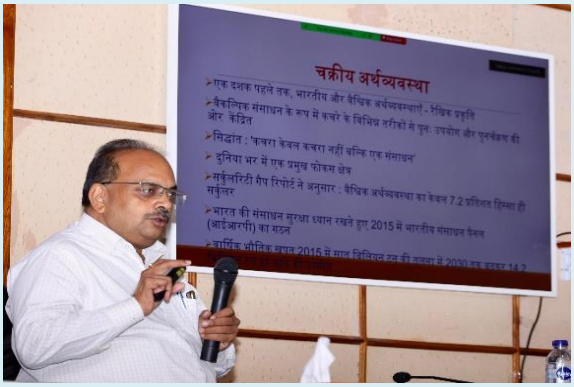

डॉ. शाक्यवार ने "प्राकृतिक रेशे वाली फसलों में चक्रीय अर्थव्यवस्था" विषय पर मुख्य व्याख्यान भी प्रस्तुत किया।

प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति को दिया

संगोष्ठी में ऑनलाइन रूप से जुड़े मेहमान ने अपनी प्रस्तुति को दिया

संगोष्ठी में शामिल किये गए सरांशो को एक पुस्तिका के रूप में संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन भी किया गया।